International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED)
ISSN: 2320-8708, Vol. 12 Issue 1, Jan.-Feb., 2024, Impact Factor: 8.376

प्रवासी भारतीय दिवस

डॉ. प्रियंका

एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, महारानी किशोरी मेमोरियल कन्या महाविद्यालय

प्रस्तावना

18वीं शताब्दी में गुजराती व्यापारियों ने केन्या, युगांडा, ज़िम्बाब्वे, ज़ाम्बिया, दक्षिण अफ्रीका में व्यापार करने की सोची और विदेश पहुंच गए। इन्हीं में से एक व्यापारी दादा अब्दुल्ला सेठ के कानूनी प्रतिनिधि के रूप में मोहनदास करमचंद गांधी मई, 1893 में दक्षिण अफ्रीका के नटाल प्रांत में पहुंचे। तब उन्होंने वहां रंगभेद को लेकर हिंसा और भेदभाव को देखा। तब रंगभेद नीति के विरोध में उनका संघर्ष और प्रवासी भारतीय समुदाय के सम्मान की उनकी लड़ाई सर्वविदित है। अहिंसा और सत्याग्रह जैसे विरोध के बिलकुल नए और अनजान तरीकों से वह अपने मिशन में कामयाब हुए। इसके बाद 9 जनवरी 1915 को गांधीजी दक्षिण अफ्रीका से भारत वापस लौटे। उनके लगभग 22 साल के संघर्षमय विदेश प्रवास से प्रेरणा लेकर ही उनके स्वदेश वापसी के दिन को प्रवासी भारतीय दिवस के रूप में मनाया जाता है। नया साल आते ही दुनियाभर में बसे भारतीय अपनी मातृभूमि या पुरखों की जन्मभूमि पर आने का प्लान बना लेते हैं। मौका होता है प्रवासी भारतीय दिवस का। हर साल प्रवासी दिवस या NRI दिवस भारत के विकास में प्रवासी भारतीयों के योगदान का उत्सव मनाने का अवसर होता है। यह दिन प्रवासी भारतीयों की उपलब्धियों का सम्मान करने और भारत एवं वैश्विक भारतीय समुदाय के बीच संबंधों को मजबूत करने का भी अवसर होता है। 2023 में 17वें प्रवासी भारतीय सम्मेलन में PM नरेंद्र मोदी ने कहा कि प्रवासी भारतीय भारत के 'ब्रांड एंबेसडर' हैं। भारत अगले 25 वर्षों के अमृत काल में प्रवेश कर चुका है और इस यात्रा में हमारे प्रवासी भारतीयों का महत्वपूर्ण स्थान है। भारत सरकार प्रवासी भारतीय दिवस सम्मेलन के द्वारा दुनिया के कई हिस्सों में रहने वाले प्रवासी समुदाय के साथ बातचीत करने के लिए एक आदर्श मंच प्रदान करता है।

9 जनवरी, 1915 को, महात्मा गांधी दक्षिण अफ्रीका से भारत आए और सबसे महान प्रवासी बने जिन्होंने भारत के स्वतंत्रता संग्राम का नेतृत्व किया और भारत को ब्रिटिश या औपनिवेशिक शासन से मुक्त कराया। उन्होंने न केवल भारतीयों का जीवन बदला बल्कि एक उदाहरण भी बनाया कि अगर किसी व्यक्ति के सपने और इच्छाएं स्पष्ट हों तो वह कुछ भी हासिल कर सकता है। एक अनिवासी भारतीय या प्रवासी के रूप में, उन्हें उस परिवर्तन और विकास के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया जाता है जो भारत में ला सकता है।

भारत सरकार के अनुसार एनआरआई के पास दुनिया भर में व्यापार और विकास रणनीतियों के मामले में वैश्विक प्रदर्शन है। यदि उन्हें कुछ अवसर प्रदान किया जाए तो वे अपनी मातृभूमि यानी भारत में अपने विचारों और अनुभवों को शामिल करके विकास प्रक्रिया में योगदान देंगे।

प्रवासी भारतीय दिवस का इतिहास

भारत के पांच हजार से भी पुराने महान् इतिहास में इस देश में विश्व के विभिन्न भागों से हर तरह के हमलावर एवं आगंतुक आते रहे हैं। इस प्रक्रिया में, अपने इतिहास के दौरान भारत ने अनेक संस्कृतियों एवं सभ्यताओं को समाहित किया है तथा सभी हमलावरों ने अंतत: भारत को अपने घर के रूप में अपनाया है। भारत में विदेशियों के आने का सिलसिला आर्यों से शुरू हुआ जो मध्य एशिया ये यहां आए थे तथा यह सिलसिला अंग्रेजों के समय तक चलता रहा। जो भारतीय सबसे पहले विदेश गए वे सम्राट अशोक के दूत थे जो ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी में बौद्ध धर्म के सिद्धांतों का प्रसार करने के लिए गए थे। इसके बाद चोल वंश ने अपनी शाखाओं को सुदूर पूर्व में फैलाया। ऐसा कहा जाता है कि भारत के व्यापारियों ने अपने खुद के पोतों का निमार्ण किया था तथा वे कारोबार की तलाश में रोम एवं चीन तक जा पहुंचे थे। 19वीं शताब्दी के दौरान तथा भारत में ब्रिटिश शासन की समाप्ति तक, भारत के लोग करारनामा प्रणाली के अंतर्गत अंग्रेजों के अन्य उपनिवेशों - मॉरीशस, गुयाना, कैरेबियन, फिजी एवं पूर्वी अफ्रीका में गए। इसी अवधि में गुजराती एवं सिंधी सौदागर अडेन , ओमान, बहरीन, दुबई, दक्षिण अफ्रीका एवं पूर्वी अफ्रीका , जिसमें से अधिकांश पर अंग्रेजों का शासन था, में जा कर बस गए।

प्रवासी भारतीय दिवस कैसे मनाते है –

साल 2002 में तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने प्रवासी भारतीय दिवस मनाने की घोषणा की थी और 2003 में पहली बार प्रवासी भारतीय दिवस मनाया गया था । हालांकि इसकी संकल्पना लक्ष्मीमल सिंघवी समिति ने ही की थी. साल 2015 में इसमें संशोधित किया गया और तब से हर दो साल बाद इस दिन को मनाया जाने लगा। 2003 से, पीबीडी सम्मेलन हर साल आयोजित किए जा रहे हैं। हर दो साल में एक बार पीबीडी मनाने और बीच की अवधि के दौरान विदेशी प्रवासी विशेषज्ञों, नीति निर्माताओं और हितधारकों की भागीदारी के साथ थीम -आधारित पीबीडी सम्मेलन आयोजित करने के लिए इसके प्रारूप को 2015 से संशोधित किया गया है। पीबीडी कन्वेंशन विदेश मंत्रालय का प्रमुख कार्यक्रम है और प्रवासी भारतीयों के साथ जुड़ने और जुड़ने के लिए एक महत्वपूर्ण मंच प्रदान करता है।

प्रवासी भारतीय दिवस मनाने का अपना एक विशेष ढंग है। सबसे पहले इस कार्यक्रम का प्रधानमंत्री द्वारा दीप प्रज्वलित करके उद्घाटन किया जाता है। इसके बाद मुख्य अतिथि , प्रधानमंत्री और माननीय व्यक्ति अपने स्थान ग्रहण करते है। इन कार्यों के बाद इस दिन के जश्न में तमाम तरह के

भाषण, रंगारंग तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये जाते है और इन सबके अंत में राष्ट्रपति द्वारा भारतीय प्रवासियों को विदेशों में भारत का नाम बढ़ाने के लिए पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है। प्रवासी भारतीय दिवस के दिन कई सारे कार्यक्र म आयोजित किये जाते है। सभी कार्यक्रम विदेश मंत्रालय द्वारा आयोजित किये जाता है , जिसमें सांस्कृतिक कार्यक्रम , भाषण, पुरस्कार वितरण जैसे कार्यक्रम प्रमुख होते है। प्रवासी भारतीय दिवस पर होने वाले यह कार्यक्रम इस उत्सव की शोभा को और भी बढ़ा देते है। इस दिन भारत सरकार द्वारा किसी महत्वपूर्ण भारतीय प्रवासी को इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रुप में आमंत्रित किया जाता है , जिसने की अपने कार्यों द्वारा भारत का नाम रोशन किया हो। इसके बाद भारतीय प्रवासियों के उपलब्धियों पर चर्चा की जाती है तथा इसके साथ देश में बढ़ती परेशानियों और समस्याओं पर भी चिंतन किया जाता है और इन्हें दूर करने का समाधान प्रस्तुत किया जाता है। इस दौरान प्रवासी भारतीयों को भारत में तकनीकी और उद्योग को बढ़ाने के लिए भारत में निवेश करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। भारत में निवेश करने वाले प्रवासियों के लिए भारत सरकार द्वारा कई तरह की योजनाएं चलाई जाती है , ताकि उन्हें भारत में व्यापार और उद्योग स्थापित कर सके और भारत की अर्थव्यवस्था बनी रहे।

कौन हैं प्रवासी भारतीय

प्रवासी भारतीय उन लोगों को कहा जाता है जो भारत छोड़ कर दूसरे देशों में रह रहे है। विदेश मंत्रायल के अनुसार प्रवासी भारतीय को तीन भागों में बांटा गया है-

1- NRI (नॉन रेजिडेंट इंडियन): ऐसे भारतीय जो रोजगार या शिक्षा के लिए दूसरे देशों में जाते हैं और बाद में वहीं बस जाते हैं उसे एनआरआई कहा जाता है।

2- PIO (पर्सन ऑफ इंडियन ओरिजिन): इनमें वो लोग शामिल हैं जो या तो भारत में पैदा हुए हो या उनका परिवार का नाता भारत से हो।

3- OCI (ओवरसीज सिटीजन ऑफ इंडिया): 26 जनवरी 1950 को या उसके बाद भारत के नागरिक रहे लोग जो अब विदेश में बस गए हैं उन्हें इस कैटेगरी में डाला जाता है।

हर बार होती है एक थीम

साल 2003 से साल 2015 तक हर साल 9 जनवरी को प्रवासी भारतीय दिवस मनाया जाता था। लेकिन, साल 2015 में इसमें संशोधन किया गया और अब हर दो साल में इसे एक बार मनाने का फैसला लिया गया। तभी से प्रवासी भारतीय दिवस की हर दो साल में एक विशेष थीम होती है। इसी थीम पर यह खास दिन मनाया जाता है। वर्ष 2015 में प्रवासी भारतीय दिवस की थीम 'अपना भारत अपना गौरव' तय की गई। तब यह सम्मेलन गुजरात के गांधीनगर में मनाया गया था। यह 13वां सम्मेलन था। साल 2017 में प्रवासी भारतीय दिवस की थीम 'प्रवासी भारतीय-संबंधों के नए आयाम' तय की गई। तब यह सम्मेलन कर्नाटक के

बेंगलुरु में मनाया गया था। उस साल 30 देशों के लगभग 8000 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। वहीं इस समागम के मुख्य अतिथि पुर्तगाल के प्रधानमंत्री डॉ. एंटोनियो कोस्टा थे। साल 2019 यानि 15वां सम्मेलन की थीम 'नये भारत के निर्माण में प्रवासी भारतीयों की भूमिका' तय की गई थी। तब यह आयोजन उत्तर प्रदेश के वाराणसी में किया गया था। इस साल मॉरीशस के प्रधानमंत्री प्रविंद कुमार जुगन्नाथ मुख्य अतिथि थे और नॉर्वे की संसद के सदस्य हिमांशु गुलाटी विशेष अतिथि थे। साल 2021 में 16वां सम्मेलन नई दिल्ली में आयोजित किया गया था। जिसका विषय था 'आत्मनिर्भर भारत में योगदान'। दरअसल कोरोना के कारण यह वर्चुअल सम्मेलन था। वहीं इस साल 2023 में इस सम्मेलन की थीम है- 'प्रवासी: अमृत काल में भारत की प्रगति के विश्वसनीय भागीदार'।

2023 में 'पधारो म्हारा घर' अभियान की पहल इस बार मध्य प्रदेश में सम्मेलन का आयोजन किया गया। इसके लिए एक अलग अभियान चलाया गया था। दरअल प्रवासी भारतीय सम्मेलन के लिए इंदौर विकास प्राधिकरण के द्वारा 'पधारों म्हारा घर अभियान' की पहल 'अतिथि देवो भव' की तर्ज पर की गई है। इसके तहत शहर के करीब 75 परिवारों द्वारा अपने घरों में प्रवासियों के लिए ठहरने हेतु अपनी सहमति दी गई है। ऐसा पहली बार किया जा रहा है। दरअसल राज्य सरकार इंदौर आने वाले प्रवासी भारतीयों के लिए स्वागत सत्कार में कोई भी कमी नहीं छोड़ना चाहती। इसके लिए अनूठे प्रयास किए जा रहे हैं। प्रवासी भारतीय दिवस से भारत को क्या फायदा? एक आंकड़े के मुताबिक दुनियाभर के 100 से ज्यादा देशों में 3.2 करोड़ से ज्यादा भारतीय मूल के लोग रहते हैं। पिछले 28 साल के अंदर विदेश जाकर बसने वाले भारतीयों की संख्या में 346% का इजाफा हुआ है। सबसे ज्यादा भारतीय नागरिक अमेरिका में बस गए हैं। दुनियाभर में प्रवासी भारतीयों का काफी दबदबा है। 70 से ज्यादा भारतीय मूल के नेता हैं, जिन्होंने दुनिया के अलग-अलग देशों में ऊंचे पदों को हासिल किया है। वहीं दुनियाभर में रहने वाले प्रवासी भारतीय अपने देश की मदद करने में भी पीछे नहीं हटते हैं। अगर 2022 की बात करें तो प्रवासी भारतीयों ने सबसे ज्यादा 100 अरब डॉलर भारत में भेजे। अपने देश विदेशी मुद्रा भेजने के मामले में प्रवासी भारतीय सबसे आगे हैं।

प्रवासी भारतीय दिवस लिस्ट-:

2003 से लेकर अब तक हर साल भारत के किसी भी शहर में प्रवासी भारतीय दिवस मनाया जाता है। अब तक मनाए गए सभी प्रवासी भारतीय दिवस की एक अनुसूची निम्नलिखित है-

- वर्ष 2003 में, पहला प्रवासी भारतीय दिवस, नई दिल्ली में हुई थी।
- वर्ष 2004 में, दूसरा प्रवासी भारतीय दिवस, नई दिल्ली में हुई थी।
- वर्ष 2005 में, तीसरा प्रवासी भारतीय दिवस, मुंबई में हुई थी।
- वर्ष 2006 में, चौथा प्रवासी भारतीय दिवस, हैदराबाद में हुई थी।

- वर्ष 2007 में, पाँचवां प्रवासी भारतीय दिवस, नई दिल्ली में हुई थी।
- वर्ष 2008 में, छठा प्रवासी भारतीय दिवस, नई दिल्ली में हुई थी।
- वर्ष 2009 में, सातवाँ प्रवासी भारतीय दिवस, चेन्नई में हुई थी।
- वर्ष 2010 में, आठवाँ प्रवासी भारतीय दिवस, नई दिल्ली में हुई थी।
- वर्ष 2011 में, नौवाँ प्रवासी भारतीय दिवस, नई दिल्ली में हुई थी।
- वर्ष 2012 में, दसवाँ प्रवासी भारतीय दिवस, जयपुर में हुई थी।
- वर्ष 2013 में, ग्यारहवाँ प्रवासी भारतीय दिवस, कोच्चि (केरल) में हुई थी।
- वर्ष 2014 में, बारहवाँ प्रवासी भारतीय दिवस, नई दिल्ली में हुई थी।
- वर्ष 2015 में, तेरहवाँ प्रवासी भारतीय दिवस, गांधीनगर (गुजरात) में हुई थी।
- वर्ष 2016 में, आयोजन नहीं हुआ था।
- वर्ष 2017 में, चौदहवाँ प्रवासी भारतीय दिवस, बंगलुरु में हुई थी।
- वर्ष 2018 में, प्रवासी भारतीय दिवस, सिंगापुर में हुई थी।
- वर्ष 2019 में, पन्द्रहवां प्रवासी भारतीय दिवस, वाराणसी (उत्तर प्रदेश) में हुई थी।
- वर्ष 2021 में, सोलहवां प्रवासी भारतीय दिवस, वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से, नई दिल्ली में हुई थी।।
- वर्ष 2023 में, सत्तरवा प्रवासी भारतीय दिवस, इंदौर मध्य प्रदेश में हुई थी।

प्रवासियों के समक्ष प्रमुख चुनौतियां-:

- **शारीरिक, आर्थिक और मानसिक शोषण हेतु सुभेद्य होना:** प्रवासी लोगों की कमजोर आर्थिक और राजनीतिक स्थिति के कारण इनके शारीरिक, आर्थिक और मानसिक शोषण होने की प्रबल आशंका विद्यमान रहती है। प्रायः ऐसा देखा गया है कि नॉन स्टेट एक्टर्स के द्वारा ह्यूमन ट्रैफिकिंग के लिए प्रवासी सबसे आसान टारगेट होते हैं। गौरतलब है कि विदेशों में नौकरी या भारत के किसी राज्य में नौकरी दिलाने के नाम पर प्रवासी को मानव तस्करी के जाल में फंसा लिया जाता है। एक बार मानव तस्करी के जाल में फंसने के उपरांत इन्हें वेश्यावृति, बेगार श्रम, ड्रग पेडलर, भिक्षावृत्ति, ऑर्गन ट्रांसप्लांट इत्यादि गतिविधियों में शामिल कर दिया जाता है।
- **भाषा अवरोध:** प्रवासी लोगों के लिए भाषा एक प्रमुख चुनौती होती है जिससे वे प्रायः किसी देश या राज्य के अवसरों का लाभ नहीं उठा पाते।
- **रोजगार के अवसर:** प्रवासी लोगों के समक्ष सबसे प्रमुख चुनौती के रूप में रोजगार के अवसर सामने आते हैं क्योंकि कौशल, भाषा इत्यादि कारकों के कारण प्राय: रोजगार के अवसर सीमित हो जाते हैं।

- **आवास:** प्रवासी लोगों को एक बेहतर आवास के लिए काफी जद्दोजहद करना पड़ता है कम आय का स्तर होने से उन्हें पर प्रायः निम्न आवासीय सुविधा वाले स्थलों में अपना जीवन व्यतीत करना पड़ता है।
- **स्थानीय सेवाओं तक पहुंच:** स्थानीय लोगों की तुलना में प्रवासी लोगों को सार्वजनिक सेवाओं जैसे बिजली, जल, एलपीजी कनेक्शन, निशुल्क स्वास्थ्य लाभ, सस्ते दर पर अनाज इत्यादि जैसी सुविधाएं नहीं ले पाते।
- **परिवहन के मुद्दे:** भाषा इत्यादि की बाध्यता, प्रतिकूल आवास इत्यादि के कारण से इन्हें परिवहन से जुड़ी समस्याओं का भी सामना करना पड़ता है।
- **सांस्कृतिक मतभेद:** विभिन्न देशों या राज्यों में निवास कर रहे स्थानीय जनसंख्या से भिन्न धार्मिक, सामाजिक मान्यता होने पर यह सांस्कृतिक मतभेद के रूप में सामने आते हैं जिसमें कई बार हिंसा के तत्व भी शामिल हो जाते हैं।
- **बच्चों की परवरिश:** प्रवासी लोगों के बच्चों की परवरिश में भी काफी समस्याएं आती हैं क्योंकि एक दूसरे देश में या दूसरे राज्य में बच्चों को वहां की सांस्कृतिक सामाजिक पृष्ठभूमि के अनुसार रूपांतरित होने में काफी समय लगता है।
- **पक्षपात और भेद भाव:** प्रवासी लोग के राजनैतिक अधिकार न होने के कारण प्राय: सरकार से दी जाने वाली सुविधाओं में पक्षपात किया जाता है एवं इन सुविधाओं में स्थानीय लोगों को ज्यादा वरीयता दी जाती है। इसके साथ ही प्रवासी लोग के साथ कई बार नस्लभेद समेत हिंसा का भी शिकार होते है।
- **एकांत:** प्रवासी लोग अपने परिवारों से दूर रहते हुए एकांतवास में जीने को मजबूर होते हैं जिसके कारण से वे अन्य लोगों की तुलना में ज्यादा तनाव में रहते है और मनोवैज्ञानिक कारकों से ज्यादा प्रभावित होता है।
- **मौसम: प्रवासी लोग को प्राय**ः अपने मूल देश से अन्य स्थान पर मौसम संबंधी बदलाव के समस्याओं का सामना करना पड़ता है।
- **क्षेत्रीयता:** इसके साथ ही कई बार क्षेत्रीयता (उदाहरण ‘‘माटी पुत्र की अवधारणा’’) के कारण प्रवासियों के साथ दुर्व्यवहार एवं हिंसा किया जाता है।
- **नस्लीय भेदभाव:** कई बार नस्लीय आधार पर प्रवासियों के साथ दुर्व्यवहार एवं हिंसा किया जाता है।

प्रवासी भारतीय दिवस का महत्व-:

मुख्य रूप से प्रवासी भारतीय दिवस का उद्देश्य भारत सरकार के साथ जुड़ने, अपने अनुभव साझा करने और भारतीय समुदाय की विशेषज्ञता को साझा करने का मंच है। इस अवसर पर सरकार भारत की उपलब्धियों और प्रगति को प्रदर्शित करने के साथ ही प्रवासी भारतीयों से निवेश और बिजनस जुटाने की कोशिश करती है। इस अवसर पर बिजनस, अर्थव्यवस्था, शिक्षा, स्वास्थ्य, साइंस और टेक्नोलॉजी, सांस्कृतिक मसलों पर सत्र आयोजित होते हैं। प्रवासी भारतीयों को अपने साथ जोड़कर देश की समस्याओं को हल करने में उनकी मदद ली जाती है। प्रवासी भारतीयों की देश को फायदा पहुंचाने में अहम भूमिका मानी जाती है। विदेशों में बसे ये भारतीय देश का नाम रोशन तो करते ही हैं, साथ ही वे कभी भी देश की मदद करने से पीछे नहीं हटते हैं। भारत में विदेशी मुद्रा आने का सबसे बड़ा स्त्रोत भी यहीं प्रवासी हैं। देश में विदेशी मुद्रा भेजने के मामले में भारतीय सबसे अव्वल हैं, इसके बाद मैक्सिको और फिर चीन के लोगों का नंबर आता है। बीते साल भारतीय प्रवासियों ने देश में 100 अरब डालर भेजे थे। प्रवासी भारतीय दिवस आयोजित करने के पीछे की वजह भी यही है, ताकि इन लोगों के योगदान की सराहना की जा सके।

प्रवासी भारतीयों के लिये भारत सरकार की प्रमुख पहल-:

- भारत को जानें कार्यक्रम
- भारत का अध्ययन कार्यक्रम
- प्रवासी बच्चों के लिये छात्रवृत्ति कार्यक्रम
- प्रवासी भारतीय पतियों द्वारा परित्यक्त/तलाकशुदा भारतीय महिलाओं के लिये कानूनी/वित्तीय सहयोग योजना
- मूल जड़ों की खोज
- महात्मा गांधी प्रवासी सुरक्षा योजना
- प्रवासी भारतीय बीमा योजना
- प्रवासी भारतीय तीर्थ दर्शन योजना
- प्रवासी भारतीय सम्मान
- दुनियाभर में भारतीय समुदाय के साथ बेहतर संवाद के लिए रिश्ता पोर्टल

100 से ज्यादा देशों में बसे हैं प्रवासी भारतीय-:

दुनियाभर में 3 करोड़ से ज्यादा भारतीय रहते हैं, ये 100 से ज्यादा देशों में बसे हैं। सबसे ज्यादा प्रवासी भारतीय अमेरिका में रहते हैं, उसके बाद यूएई, मलेशिया, साउदी अरब, म्यांमार, ब्रिटेन और फिर कनाडा का नंबर आता है। अलग-अलग देशों में बसे ये भारतीय प्रवासी देश का नाम रोशन कर रहे हैं। माना जाता है कि विदेशों में ये प्रवासी भारतीय उनकी आर्थिक व राजनीतिक स्थिति तय करने में भी अहम भूमिका निभाते हैं।

विश्व की 500 बड़ी कंपनियों के चीफ एग्जीक्यूटिव ऑफिसर (CEO) भारतीय मूल के ही हैं। बता दें कि कुछ तो इनमें से देश के प्रधानमंत्री तक बन गए हैं। अमेरिका की उपराष्ट्रपति कमला हैरिस और हाल ही में ब्रिटेन के पीएम बने ऋषि सुनक भारतीय मूल के ही हैं। गूगल के CEO सुंदर पिचाई, एडोब के सीइओ शांतनु नारायण, माइक्रोसॉफ्ट के सत्या नडेला, आईबीएम के अरविंद कृष्णा और मास्टरकार्ड के सीइओ अजयपाल सिंह भी भारतीय मूल के हैं। यहां तक की ट्विटर से हाल ही में हटाए गए सीईओ पारस अग्रवाल भी भारतीय मूल के थे।

इस प्रकार, प्रवासी भारतीय समुदाय एक विविध विजातीय और मिलनसार वैश्विक समुदाय है जो विभिन्न धर्मों, भाषाओं, संस्कृतियों और मान्यताओं का प्रतिनिधित्व करता है। एक आम सूत्र जो इन्हें आपस में बांधे हुए है, वह है भारत और इसके आंतरिक मूल्यों का विचार। प्रवासी भारतीयों में भारतीय मूल के लोग और अप्रवासी भारतीय शामिल हैं और ये विश्व में सबसे शिक्षित और सफल समुदायों में आते हैं। विश्व के हर कोने में, प्रवासी भारतीय समुदाय को इसकी कड़ी मेहनत, अनुशासन, हस्तक्षेप न करने और स्थानीय समुदाय के साथ सफलतापूर्वक तालमेल बनाये रखने के कारण जाना जाता है। प्रवासी भारतीयों ने अपने आवास के देश की अर्थव्यवस्था में महत्त्वपूर्ण योगदान किया है और स्वयं में ज्ञान और नवीनता के अनेक उपायों का समावेश किया है।

सन्दर्भ सूची - इंटरनेट, मीडिया, पत्र पत्रिकाएं, सम्पादकीय लेख